

ii. मध्य में स्थित पाई वाले वर्ण:

'क' और 'फ' के 'हुक' को हटाकर

क्+त = क्त (शक्त/शक्+ति = शक्ति)

फ्+त = फ्त (गुफ्तगू, मुफ्त)

iii. बिना खड़ी पाई वाले वर्ण: जिनके ऊपर की ओर खड़ी पाई का छोटा रूप दिखलाई पड़ता है। (छ के ऊपर की पाई मानक लिपि में हटा दी गई है) ड, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ जैसे:

इ+म = वाइमय

छ्+व = उच्छवास

ट्+ट = निखट्ट, खट्टा

ठ्+य = शाठ्य, पाठ्य

ङ्+ग = खङ्ग

ढ्+य = आढ्य

द्+य = विद्यमान

ह्+म = परब्रह्म

ह्+न = चिह्न

ह्+व = जिह्वा

विशेष: 'इ' की मात्रा वर्ण की बाईं तरफ लगती है। अतः हलन्त वर्णों के प्रयोग के समय मानक वर्तनी में यह मात्रा संबंधित वर्ण से पूर्व ही लगाई जाए। जैसे- बुद्धि ('बुद्धि' नहीं)

वर्तनी का मानकीकरण

1. परसर्ग

i. ने, को, से, का, में आदि परसर्ग को संज्ञा, विशेषण शब्द से मिलाकर न लिखा जाना अपेक्षित है

जैसे- बालक ने, घर को, बालकों का वृक्ष में घर पर

ii. किंतु सर्वनाम शब्दों के साथ परसर्ग मिलाकर लिखे जाएँ।

जैसे- अपने, मैंने, हमने, तुमने, उसको, मुझमें।